CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF 2021 - 6.169

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 28th Jan. 2022, Revised on 26th Feb. 2022, Accepted 25th Mar. 2022

शोध–आलेख

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सोशल मीडिया के संदर्भ में सामाजिक, नैतिक ओर पर्यावरणीय मूल्यों का अध्ययन

* डॉ. कुलदीप पारीक
सहायक आचार्य
एस. एस. जी पारीक पी.जी. शिक्षा महाविद्यालय, जयपुर
Email-pareekkuldeep53@gmail.com, Mob- 8114425551

मुख्य शब्द– *सोशल मीडिया, जीवन मूल्य, नैतिक ओर पर्यावरणीय मूल्यों का अध्ययन आदि।*

शोध सारांश

मूल्य जीवन का आधार है। हमारे जीवन में मूल्यों की योग्यता हर स्तर पर आंकी जाती है। शाब्दिक रुप से देखा जाए तो जीवन मूल्य को अंग्रेजी में ''लाइफ वैल्यूज'' कहते हैं। मूल्य समस्त वांछित व्यवहार का मानदंड है। मूल्य परिस्थिति और विशेष घटनाओं से युक्त होते है। अपने कार्यों का बचाव हम नैतिक साहस के अनुसार करते हैं। इस प्रकार मूल्य हमारे जीवन के दिशा निर्देश सिद्धांत है।

प्रस्तावना

सोशल मीडिया संप्रेषण तथा प्रसारण के एक प्रमुख साधन ओर शक्तिशाली माध्यम के रुप में विकसित हो रहा है। इसे मानव जीवन में एक महत्वपूर्ण क्रांति आई है। यह जनसंचार साधनों में सबसे सशक्त साधन है। इसमें दृश्य–श्रव्य संप्रेषण के विभिन्न साधन भी उपलब्ध है। मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक अपने रुप होते है। जन्म के उपरांत बालक अपने आस–पास के सामाजिक वातावरण से प्रभावित होता है। शिशु अपने परिवार के सदस्यों, साथियों एवं स्वयं की रुचियों एवं इच्छाओं से प्रभावित होकर अपने सामाजिक व्यवहार का निर्माण करता है। सामाजिक व्यवहार स्थिर न होकर परिवर्तनशील होता है। सामाजिक व्यवहारों कें फलस्वरुप ही जीवन मूल्यों का निर्माण होता है। युवावस्था में प्रत्येक युवक–युवती का जीवन विस्तृत हो जाता है। वह परिवार की दुनिया से निकलकर बाहरी किंतु यर्थाथ की दुनिया में प्रवेश करता है। युवावस्था में जीवन मूल्य की सभी पहलू परिलक्षित हो जाते हैं। इस समय युवावर्ग पर सोशल मीडिया पर प्रसारित सूचनाओं का अत्यधिक प्रभाव पडता है।

अध्ययन का औचित्य

ईश्वर ने मनुष्य को बौद्धिक क्षमता प्रदान की है इसलिए वह समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ माना जाता है। अपनी बौद्धिक एवं तार्किक क्षमता के द्वारा ही मानव अपने विचारों एवं कल्पनाओं को साकार कर सकता है तथा नवीन परिस्थितियों के साथ समायोजन करने मे समर्थ होता है। व्यक्ति के अंदर विद्यमान यह मौलिक योग्यता एंव व्यक्ति व्यक्तित्व ही मूल्य है ओर इसी गुण के कारण ही मनुष्य वर्तमान जगत को नवीन आयाम प्रदान करते है। रिसर्च की कुछ स्टडी में यह भी सामने आया है कि बडी संख्या में सोशल मीडिया इस्तेमाल करने वाले बच्चे अपने स्कूल से सबंधित विषयों पर अपने सीनियर छात्रों से लगातार कम्यनिकेट करते है। जिससे उनकी परफार्मेंस पर नेगेटिव नहीं बल्कि पॉजिटीव प्रभाव पड रहा है। स्टडी में यह भी सामने आया है कि यह बिल्कुल भी जरूरी नहीं है कि सोशल मीडिया पर ऐक्टिव रहने वाले बच्चे अपनी पढाई को कम टाइम देते है। हालांकि इस स्टडी में यह भी सामने आया है कि जरुरत से ज्यादा सोशल मीडिया इस्तेमाल करने वाले बच्चों की ऐकेडमिक परफॉर्मेंस कुछ प्रभावित हुई है लेकिन यह प्रभाव बहुत कम है।

इस बारे में बंत करते हुए स्टडी को –ऑथर प्रोफेसर मार्कस अपेल ने कहा, 'हमने पाया है कि ज्यादा ओपन–माइंडेड पैरंट्स अपने बच्चों की ऑनलाइन ऐक्टिविटी का सम्मान करते है ओर इससे बच्चों के साथ कम्पयूनिकेट करने में काफी मदद मिलती है।'

समस्या कथन

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सोशल मीडिया के संदर्भ में सामाजिक, नैतिक ओर पर्यावरणीय मूल्यों का अध्ययन

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों (छात्र–छात्राओं) का सोशल मीडिया के संदर्भ में सामाजिक मूल्य का अध्ययन करना।

4. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों (छात्र –छात्राओं) को सोशल मीडिया के संदर्भ में नैतिक मूल्य का अध्ययन करना।

7. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों (छात्र–छात्राओं) का सोशल मीडिया के संदर्भ में पर्यावरणीय मूल्य का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया है –

- उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों (छात्र–छात्राओं) का सोशल मीडिया के संदर्भ में सामाजिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के (छात्र–छात्राओं) का सोशल मीडिया के संदर्भ में नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के (छात्र–छात्राओं) का सोशल मीडिया के संदर्भ में पर्यावरणीय मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन मे शोधकर्ता ने जयपुर जिले के 4 उच्च माध्यमिक सरकारी विद्यालयों का चयन कर प्रत्येक विद्यालय से 30 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया जिसका कुल न्यादर्श 120 विद्यार्थी (छात्र–छात्राएँ) न्यादर्श में सम्मिलित हैं ।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर

(1) **स्वतंत्र चर**

(अ) विभिन्न संकाय

(ब) छात्र–छात्राएँ

(2) **आश्रित चर**– पाठ्य सहगामी क्रियाएँ

शोध अध्ययन में प्रयुक्त विधि

अपने उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने अपने अध्ययन हेतु सर्वेक्षणात्मक–अनुसंधान विधि का प्रयोग किया है।

तथ्य संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने स्वनिर्मित प्रश्नावली को अपने शोधकार्य हेतु प्रयुक्त किया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया है।

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी परीक्षण

शोध अध्ययन में प्रयुक्त परिकल्पनाओं के निष्कर्ष

1. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों (छात्र–छात्राओं) का सोशल मीडिया के संदर्भ में सामाजिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

उच्च माध्यमिक स्तर के अध्ययनरत् सरकारी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं मे सोशल मीडिया के संदर्भ में सामाजिक मूल्य के अध्ययन से सबंधित आंकडों को प्रदर्शित करती है। डी.एफ –58 का टी तालिका मूल्य 0.84 प्राप्त हुआ है। डी.एफ 58 व सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी से प्राप्त टी–मूल्य 2.00 है। गणना से प्राप्त मान 0.84 सारणी से प्राप्त मान 2.00 से कम है अतः बनायी गई परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों (छात्र–छात्राओं) का सोशल मीडिया के संदर्भ में सामाजिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है स्वीकृत होती है।

2 उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों (छात्र–छात्राओं) को सोशल मीडिया के संदर्भ में नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

उच्च माध्यमिक स्तर के अध्ययनरत् सरकारी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं मे सोशल मीडिया के संदर्भ में नैतिक मूल्य के अध्ययन से सबंधित आंकडों को प्रदर्शित करती है। डी.एफ –58 का टी तालिका मूल्य 1.70 प्राप्त हुआ है। डी.एफ 58 व सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी से प्राप्त कम है। अतः बनाई गई परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के (छात्र–छात्राओं) का सोशल मीडिया के संदर्भ में नैतिक मूल्यों मे सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है स्वीकृत होती है।

3. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों व छात्र–छात्राओं का सोशल मीडिया के संदर्भ में पर्यावरणीय मूल्यों मे सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

उच्च माध्यमिक स्तर के अध्ययनरत् सरकारी विद्यालयों के छात्र–छात्राओ मे सोशल मीडिया के संदर्भ में पर्यावरणीय मूल्य के अध्ययन से सबंधित आंकडों को प्रदर्शित करती है। डी.एफ 58 का टी तालिका मूल्य 1.85 प्राप्त हुआ है। डी.एफ 58 व सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी से प्राप्त टी मूल्य 2.00 है। गणना से प्राप्त मान 1.85 सारणी से प्राप्त मान 2.00 से कम है। अतः बनाई गई परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के छात्र – छात्राओं का सोशल मीडिया के संदर्भ में पर्यावरणीय मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है स्वीकृत होती है।

भावी अध्ययन हेतु सुझाव

प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों से अध्यापकों, छात्रों, अभिभावकों को महत्वपूर्ण सुझाव दिये जा सकते है, जिनका उपयोग कर विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों को उच्च बनाया जा सकता है।

1. उच्च माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों को विधिवत सोशल मीडिया की शिक्षा लेनी चाहिए।
2. उच्च माध्यमिक शिक्षा स्तर के सभी संकाय के शिक्षकों में सोशल मीडिया अनुप्रयोग के प्रति जागरूकता बढाने के लिए सेमीनार, वर्कशाप, प्रशिक्षण आदि एवं कार्यशाला में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
3. उच्चतर माध्यमिक शिक्षा स्तर के व्यावसायिक शिक्षकों को ऑनलाईन प्रोफेसनल कोर्स में प्रवेश लेना चाहिए।
4. शिक्षकों को स्वः अधिगम वाली कक्षाओं में पढाना चाहिए।
5. शिक्षकों को समय समय पर अंशकालीन, दीर्घकालीन, कम्प्यूटर से संबंधित प्रोजक्ट वर्क मे सहभागिता करनी चाहिए।
6. शिक्षकों को अपनपे इंटरनेट ज्ञान को ई–जनरल, मैग्जीन समाचार पत्रों के माध्यम से नवीन करते रहना चाहिए।

विद्यालय हेतु सुझाव

1. विद्यालयों को अपना पूरा कार्य इंटरनेट द्वारा संचालित कराना चाहिए।
2. विद्यालयों द्वारा उन्हीं शिक्षकों को वेतन तथा पदोन्नति देनी चाहिए जिनके पास कम्प्यूटर विषय से संबंधित डिग्री हो।
3. विद्यालयों मे छात्रों से संबंधित सारे कार्य जैसे गृह कार्य दत्त कार्य, प्रोजेक्ट आदि में वह समस्या देनी चाहिए जिससे छात्र ओर अध्यापक इंटरनेट की सहायता से समस्या हल कर सकें।
4. विद्यालयों द्वारा सभी कक्षाओं में शिक्षण कार्य अधिक से अधिक कम्प्यूटर आदि की सहायता से कराना चाहिए। प्रत्येक कक्षा मे कम से कम दो सी.डी.रोम होना चाहिए जिससे शिक्षक इस तकनीकी से परिचित हो सके।

5. विद्यालयों मे शिक्षकों मे इंटरनेट अनुप्रयोग के प्रति सजगता बढाने के लिए समय–समय पर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वर्कशॉप, सेमीनार, प्रदर्शनी आदि का भी आयोजन कराना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 अग्रवाल जे.सी. : ''एसोन्सियल ऑफ एग्जामिनेशन सिस्टम'', विकास पब्लिकेशन हाऊस, न्यू देहली, 1977

2 अग्रवाल के.सी : ''एनवायरमेन्टल बायोलॉजी'', एग्रो बॉटलिकल पब्लिकेशन बीकानेर, 1987

3 अनास्तासी ए. : ''साइक्लोजिक टेस्टिंग'', मैकमिलन कम्पनी, न्यूयार्क, 1967

4 अस्थाना एवं अस्थाना : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2005

5 अरोड़ा रीटा : ''शिक्षा में नवचिंतन'', शिक्षा प्रकाशन, जयुपर, नवीन संस्करण

6 भाग्या निर्मल : ''शिक्षा में मूल्यांकन के सिद्धान्त और प्रविधियाँ'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयुपर, 1981

7 भार्गव महेश : ''आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2007

**** Corresponding Author***

डॉ. कुलदीप पारीक

सहायक आचार्य

एस. एस. जी पारीक पी.जी. शिक्षा महाविद्यालय, जयपुर

Email-pareekkuldeep53@gmail.com, Mob- 8114425551